कर्मयोग (कर्मके माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति) : खण्ड ४

पापोंके दुष्परिणाम दूर करनेके लिए प्रायश्चित

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

जुलाई २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख २९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

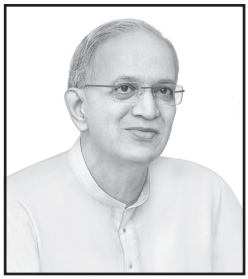

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.६.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र '*' चिन्हमें दर्शाए गए हैं ।)

१. पाप ७

* समष्टि पाप और युद्ध तथा प्राकृतिक आपदा ७
* पापका महत्त्व * पाप न लगना ९
* पापके दुष्परिणामोंका निराकरण कैसे करें ? १४

२. पाप-पुण्य दोनोंसे सम्बन्धित सूत्र ३८

* पाप-पुण्य लगनेके नियम ४०
* 'पाप एवं पुण्य' 'लेन-देनके न्याय'से भी सूक्ष्म हैं । ४३
* पाप-पुण्य एवं आध्यात्मिक उन्नति ४८

३. कर्मकी अपरिहार्यता ४९

४. कर्मके परिणामोंसे बचनेके उपाय ५२

५. कर्म कबतक करें ? ५४

६. कर्मसे मुक्त होना ५७

७. पाप-पुण्य के परे जानेके लिए साधना आवश्यक ! ५७

भूमिका

साधारणतः यह कहा जा सकता है कि धर्मशास्त्रकी दृष्टिसे निषिद्ध अथवा निन्दित कर्म करना, पाप है ! पापसे व्यक्तिका पतन होता है । पापसे रोग, दरिद्रता आदि भोगने पडते हैं । पापकर्मके फलसे कोई नहीं बचता । पापकर्मोंके विषयमें पश्चाताप व्यक्त कर, धर्मशास्त्रमें बताया गया दण्ड भोगनेपर पापसे छुटकारा हो सकता है । धर्मशास्त्रमें लिखा दण्ड भोगनेको ही 'प्रायश्चित' कहते हैं । अन्य पन्थोंमें इतना ही कहा गया है कि 'पापको स्वीकार करने, दान-धर्म करने और पश्चाताप होनेसे पापी पापमुक्त होता है ।' परन्तु, हिन्दू धर्मने इसके आगे विविध पापोंकी सूची बनाकर, पापकी तीव्रतानुसार विविध प्रकारके प्रायश्चित (देहान्त प्रायश्चित भी) बताए हैं । पापका दुष्प्रभाव दूर करनेके लिए कुछ धर्मशास्त्रीय मार्ग इस ग्रन्थमें बताए गए हैं ।

पुण्य-पापात्मक कर्मोंसे उत्पन्न होनेवाले सुख-दुःखके बन्धनसे परे जाकर, निरन्तर सच्चिदानन्द अवस्था अनुभव करनेके लिए ऐसे कर्म करने पडते हैं जिससे कर्मफल न मिले । कर्मोंसे होनेवाली हानि टालनेके लिए क्या करें, यह भी इस ग्रन्थमें बताया गया है ।

यह ग्रन्थ पढनेसे पाठकोंको पाप-पुण्यके परे देखनेकी एक नई दृष्टि मिले तथा पाप-पुण्यके परे जाकर आनन्द प्राप्त करनेके लिए सदैव साधना करनेकी प्रेरणा मिलती रहे, यह श्री गुरुसे प्रार्थना ! – **संकलकनकर्ता**

(सनातनकी 'कर्मयोग' ग्रन्थमालाकी संयुक्त भूमिका 'कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार' इस ग्रन्थमें दी है ।)

सनातनके सात्त्विक उत्पाद

- जपमाला
- अगरबत्ती
- कर्पूर
- बाती
- कुमकुम
- गोमूत्र-अर्क
- देवताके चित्र व नामपट्टियां
- इतर (इत्र)